Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 2, February-2019, ISSN 2230-7540

कॉलेज/महाविद्यालयों/विश्वविद्यालयों स्तर पर छात्रों में बढ़ता मादक-द्रव्य-व्यसन

Dr. Mohammad Kamil*

M.A., Ph.D., UGC-NET (Sociology)

सार - ***सभ्यता के आरम्भ से ही मादक-द्रव्य का प्रयोग चिकित्सा, चिन्तन, भविष्य, कथन तथा आमोद-प्रमोद के लिये होता रहा है। प्राचीन यूनान में कच्चा-अफीम को केक के अन्दर भरकर स्वतंत्र रुप से सड़कों पर बेचा जाता रहा है। वर्तमान में मादक पदार्थों का सेवन विलास, वैभव और आधुनिकता का प्रतीक समझा जाता है गलत पैसा कमाने और आतंकवादी गतिविधियां फैलाने के लिये भी मादक पदार्थों का सेवन किया जाता है।***

भारत सहित विश्व के अनेक देशों में मादक द्रव्यों एवं पदार्थों के सेवन और उनकी लत में चैंका देने वाली दर से वृद्धि हो रही है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुमान के अनुसार विश्व में लगभग 750,000 लोग हेरोइन के आदी हैं, 38 लाख लोग कोकेन का सेवन करते हैं, 17.6 लाख लोग अफीम खाने के आदी हैं, 23 लाख लोग ऐम्फिटेमिन के आदि हैं तथा 34 लाख लोग बार्बिडरेट, पीड़ा शामक और प्रशामक पदार्थों का सेवन करते हैं।[1]

----------X----------

भारत में मादक द्रव्यों का सेवन भयोत्पादक रुप से बढ़ रहा है। एक अनुमान के अनुसार भारत में लगभग 12 लाख व्यक्ति हेरोइन के व्यसनी हैं, लगभग 45 लाख अफीम के लगभग 50 हजार लोग (मुख्यतः छात्र) घातक व मति भ्रष्ट करने वाले द्रव्यों के व्यसनी हैं। हेरोइन व्यसनियों की संख्या जो सन् 1989 में 5 लाख थी वह 1990 में 10 लाख तथा 1993 में 12 लाख होने के स्पष्ट संकेत देती है।[2]

शराब और तम्बाकू के अतिरिक्त कई अन्य नशीले पदार्थ हैं जिन्हें तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है।

1. **प्राकृतिक पदार्थ:-** गांजा, चरस, भांग, अफीम, पोस्ता, कोक, पत्ते, तथा मशरुम की कुछ प्रजातियाँ। भारत में गांजा, भांग, चरस और पोस्ता का अधिक उपयोग होता है।

2. **प्राकृतिक पदार्थ से तैयार पदार्थ:-** अफीम से हेरोइन, कोक से कोकीन इत्यादि तैयार किए जाते हैं। भारत में हेरोइन की प्रमुख समस्या है।

3. **रासायनिक औशधि:-** इस वर्ग में अनेक औषधियाँ आती हैं, जिनकी लत लग जाती है।द्रव्य व्यसन का अर्थ ऐसा पदार्थ जो रोगों के लक्षणों की पहचान करने में, बीमारी का उपचार तथा रोकथाम करने में प्रयुक्त होता है या ऐसा तत्व (जो भोजन नहीं है) जो शारीरिक क्रिया में सुधार करता है।'' ''खतरनाक औषधि शब्द का प्रयोग प्रायः उन अनिद्राकारी औषधियों के सन्दर्भ में किया जाता है, जो आदत या लत डालने वाली होती है या जो अवसाद उत्पन्न करने वाली, उत्तेजना बढ़ाने वाली तथा मन में भ्रांति जागृत करके विश्राम प्रदान करने वाली क्षमता से युक्त होती है।''[3]

कालेज तथा महाविद्यालयों के छात्रा-

महाविद्यालयों के छात्र-युवकों में नशाखोरी एक गम्भीर समस्या बनती जा रही है। मादक द्रव्यों के दुरुपयोग की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। इसकी चपेट में आने वाले को शारीरिक एवं सामाजिक क्लेश पहुंचती है। एड्स के खतरे की तरह ही नशाखोरी के संभावित खतरे का असर बढ़ गया है। विभिन्न अध्ययनों से स्पष्ट किया गया है। सन् 1963 में बनर्जी ने कलकत्ता में, सन् 1972 में दयाल नें दिल्ली में, सन् 1974 में चिटनिस ने बम्बई में, सन् 1978 में सेठी और

मनचंद नें उत्तर प्रदेष में इस विषय को लेकर अध्ययन किये। सन् 1986 में केन्द्रिय सरकार के कल्याण मंत्रालय द्वारा डॉ. मोहन के नेतृत्व में नौ शहरों का अध्ययन कराया गया। यदि इन सभी अध्ययनों को सम्मलित रुप से देखा जाए तो द्रव्य दुरुपयोग की प्रचलित दर विभिन्न शहरों में 17 से 25 प्रतिशत के मध्य मिलती है।

सेठी और मनचन्दा ने अपने अध्ययन में पाया कि गैर-मेडिकल विद्यार्थियों की तुलना में मेडिकल विद्यार्थि मादक द्रव्यों का सेवन अधिक करते हैं।राम अहूजा ने सन् 1976 के अध्ययन में पाया कि मादक द्रव्यों का सर्वाधिक सेवन (26.1%) कानून के छात्र करते हैं। इसके बाद वाणिज्य के छात्र (23.6%) कला और सामाजिक विज्ञानों के छात्र (13.6%) इंजीनियरिंग के छात्र (4.6%) द्रव्यों का सेवन करते थे। सन् 1986 के अध्ययन से पता चला कि द्रव्यों का सर्वाधिक सेवन वाणिज्य के छात्र (31.6%) करते हैं उसके बाद कला और सामाजिक विज्ञानों के (27.2%) छात्र, विज्ञान में (20.3%), मेडिकल में (7.3%), इंजीनियरिंग में (6.0%), तथा कानून के (4.8%) छात्र मादक द्रव्यों का सेवन करते थें।

उपर्युक्त अध्ययन से यह भी पता चला कि 90 प्रतिशत छात्र कभी-कभी द्रव्यों का सेवन करते थे, 9 प्रतिशत छात्र नियमित हैं, जो हफ्ते में कई बार द्रव्य सेवन करते थे और केवल 1.0 प्रतिशत छात्र व्यसनी थे। लगभग 75.0 प्रतिशत विद्यार्थी शराब और तम्बाकू का सेवन करते थे, लगभग 15.0 प्रतिशत शराब, तम्बाकू तथाअन्य कोई द्रव्य लेते थे। अध्ययन से यह भी पता चला कि 20.0 प्रतिशत विद्यार्थी पीड़ा शामक (Painkillers) 35.0 प्रतिशत छात्र स्वापक (Narcotics) पदार्थ जैंसे- हेरोइन, कोकीन, गांजा व चरस आदि लेते थे। 5 से 7 प्रतिशत छात्र उत्तेजक पदार्थ (Stimulants) और 1.0 प्रतिशत से कम विद्यार्थी भ्रमोत्पादक पदार्थ (Hallueinogens) अथवा एल.एस.डी. का सेवन करते हैं।[4]

वर्तमान समय में स्कूल, कालेज और विष्वविद्यालय स्तर के छात्र-छात्राओं में मादक द्रव्यों के सेवन की प्रवृति पाई जाती है। इसका प्रतिषत कम या अधिक कुछ भी हो सकता है। महानगरीय शिक्षण संस्थाओं के छात्रों में द्रव्य-व्यसन का प्रतिशत तुलनात्मक रुप से अधिक है। वैसे अन्य नगरीय शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थी भी विभिन्न प्रकार के द्रव्यों का सेवन करते हैं। फिलिस्तीनी, इजरायली, नाइजीरियन आदि अन्य विदेशी छात्र-छात्राओं के सम्पर्क ने भी भारतीय छात्रों में द्रव्य-व्यसन को प्रोत्साहित किया है सन् 1980 में भारत के महानगरो में स्थित विश्वविद्यालयों में छात्रों के एक सर्वेक्षण से ज्ञात हुआ था कि वहां के कुल छात्रों में से लगभग 50 प्रतिशत छात्र किसी न किसी प्रकार के मद्यपान आदि का सेवन करते हैं। वर्तमान के विद्यार्थियों द्वारा मादक द्रव्यों का सेवन शारीरिक अथवा मानसिक आवश्यकता के कारण नहीं बल्कि एक फैशन, सनक अथवा आधुनिकता के परिचायक के रुप में किया जाता है। वर्तमान समय में छात्रों एवं छात्राओं की संख्या भी बहुत बढ़ गई है। छात्रायें भी मादक पदार्थों को अपने जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा मानती हैं।

मादक द्रव्य व्यसन के कारण:- मादक द्रव्य व्यसन के कारणों का विश्लेषण भिन्न-भिन्न रुप से किया गया है।

1. **सामाजिक कारण:-** दूषित सामाजिक, सांस्कृतिक वातावरण व्यक्ति में लालसा और अनुरुपता बढ़ाकर उसे द्रव्य सेवन की ओर ले जाता है। व्यक्ति सामाजिक अनुभवों को सुसाध्य बनाने के लिए, मित्र मण्डली में स्थान पाने के लिए तथा सामाजिक मूल्यों को चुनौती देने के लिए मादक द्रव्यों का दुरुपयोग करने लगता है

2. **मनोवैज्ञानिक कारण:-** मनोवैज्ञानिक के अनुसार मादक द्रव्यों का उपयोग करने वाला व्यक्ति मानसिक रुप से दुर्बल तथा अस्वस्थ्य व्यक्ति होता है। ऐसा व्यक्ति मानसिक सन्तुलन की कमी के कारण वह स्वयं को असुरक्षित अनुभव करता है। यही मनोभाव उसे मादक द्रव्यों का सेवन करने को प्रोत्साहित करते हैं।

3. **जैविक कारण:-** कुछ लोगों की शारीरिक संरचना ऐसी होती हैं, जो मादक द्रव्यों के प्रयोग की मांग करती है। लगातार इसकी पूर्ती करने से धीरे-धीरे व्यक्ति उसका आदि हो जाता है।

4. **संगति का प्रभाव**:- कभी-कभी मित्रों के आग्रह पर या दवाब डालने के कारण भी छात्र द्रव्य सेवन की शुरुवात करते हैं। महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों के छात्रों में मादक द्रव्य व्यसन को बढ़ाने की प्रवृत्ति के पीछे इस कारक का योगदान सम्भवतः सर्वाधिक है। प्रायः छात्रावासों में रहने वाले विद्यार्थी संगती के प्रभाव में आकर ही द्रव्यों का दुरुपयोग करने लगते हैं।

5. **निराशापूर्ण जीवन:-** आज की युवा पीढ़ी निराशाओं, कुण्ठाओं और तनावों से ग्रस्त है। शिक्षा की उद्देश्यहीनता, बेराजगारी, अत्याधुनिक आडम्बर-पूर्ण जीवन, सांस्कृतिक मूल्यों का क्षरण और भौतिकता की चकाचैंध उसकी निराशा के मूल

www.ignited.in

कारण है। मादक-द्रव्यों के सेवन से वह कुछ समय के लिए वह अपनी निराशा को भूल जाते हैं।

6. **दोषपूर्ण आवासीय दशायें** - मकान की स्थिति सही जगह पर न होने से अथवा घर का वातावरण अच्छा न होने के कारण प्रायः नवयुवक लोग मादक द्रव्यों का सेवन आरम्भ कर देते हैं।

7. **फेशनः-** वर्तमान भौतिकवादी समाज में युवा वर्ग का एक बड़ा समुदाय मादक द्रव्यों को फैशन के रुप में स्वीकार करने लगा है। कुछ छात्र एवं युवा कई बार जिज्ञासा वर्ष भी मादक पदार्थों का सेवन करते हैं, घीरे-धीरे औषधीय प्रभाव से प्रभावित होकर इनका दुरुपयोग करने लगते हैं।

8. **नैतिक मूल्यों में पतनः-** वर्तमान समाज में नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है। समाज में अश्लील साहित्य और नग्न रोमांटिक मनोरंजन का प्रभाव बढ़ रहा है। ऐसा वातावरण युवावर्ग को मादक पदार्थों के सेवन के लिए प्रोत्साहित करता है।

नशे में झूमते हुए, बांहो में बांहे डाल कर 'पॉप-सांग' 'गाना' लड़कियों द्वारा नग्न शरीर का प्रदर्शन करने के पूर्व प्रायः नशा लेने की आदत हैं, सिनेमा जगत में प्रायः यही होता है। ब्लू फिल्मों का प्रदर्शन, युवाओं में उन्मुक्त यौनाचार और नशीले पदार्थों के सेवन को प्रोत्साहित करता है। सस्ता अश्लील साहित्य और जासूसी उपन्यास भी मादक द्रव्य व्यसन की आदत को बढ़ाते हैं।

मादक-द्रव्य व्यसन के परिणामः-

मादक-द्रव्य व्यसन के परिणाम स्वरुप छात्र/छात्राओं का वैयाक्तिगत जीवन नष्ट हो रहा है। सामाजिक तथा राष्ट्रीय विकास बाधित हो रहा है। सामाजिक विकास का पतन हो रहा है। इस विकराल समस्या के परिणामों के कुछ प्रमख कारण यहां बताये जा रहे हैं-

- मादकपदार्थों के सेवन और तस्करी के दुष्परिणाम परिवर, स्वास्थ्य और अपराध पर पड़ते हैं।
- मादकपदार्थों के कारण कई परिवार विखंडित हो जाते हैं। परिवार के विखण्डन की घटना मादक पदार्थ के कारण गरीबी से भी अधिक व्यापक है।
- विद्यार्थियों में बढ़ते मादक पदार्थों के सेवन से होने वाली मौत से जुड़े प्रमुख पदार्थ कोकीन, हेरोइन, अफीम, एम्फैटामांइस आदि हैं।
- विद्यार्थियों में सूईं से लेने वाले मादक पदार्थों से एड्स का प्रसार होता है। इस प्रकार के मादक पदार्थों के प्रयोग करने वाले विद्यार्थियों में 40-50 प्रतिशत आबादी एड्स की शिकार है।
- मादकपदार्थों की पूर्ती करने के लिए विद्यार्थी अपराधी गिरोह में सम्मिलित हो गये हैं वे अपराध करने, ऋण वसूली करने लगे। समाचार पत्रों में मुम्बई में भाड़े के 24 वर्ष से कम उम्र के अपराधियों का रिकार्ड जारी किया गया, जिनका पहला अपराधिक गतिविधियों का कोई सबूत नहीं था।
- कुछनयाकरने अथवा अनुभव करने की आतुरता के कारण भी छात्र/छात्रायें मद्यपान करते हैं जिसका परिणाम वे अपनी शारीरिक क्षमता तथा सहनशीलता को धो देते हैं।
- आज के युग में छात्राएं भी नशे का सेवन करने लगी हैं। नैतिकता, संस्कृति और परंपरा को ताक पर रखकर छात्राएं नशे का सेवन करते हैं। हालांकि वे इसके दुष्परिणाम से अनभिज्ञ नहीं हैं। हमारी संस्कृति में पुरुषों में धूम्रपान एवं वर्जनाओं की वेड़ियों में जकड़ने की परंपरा रही है। नई पीढ़ी नें इन वर्जनाओं से मुक्ति पा ली है।
- प्रायः नशाखोरी आवसाद ग्रस्त हीन भावना से ग्रस्त, क्रुद्ध, असामाजिक प्रकृति वाले और जीवन से असंतुष्ट रहते हैं। इन सभी आयामों से पता चलता है कि नशाखोरों की मानसिकता स्वस्थ्य नहीं रहते हैं। वर्तमानसमय में छात्रों की अपेक्षा छात्रायें मादक पदार्थों का सेवन अधिक करने लगी है जिस के कारण वह अपनी मर्यादा तथा संस्कृति को भूल गयी है।
- विद्यालयोंमें छात्र/छात्रांए एक साथ डिस्कों जाते हैं नशे का सेवन करते हैं जिससे उनकी मान मर्यादा भी सुरक्षित नहीं रहती। दिन-प्रतिदिन रेप, और न जाने कितनी ही कठिनाइयों का सामना करती हैं।

मादकपदार्थों का सेवन करना छात्र एवं छात्राओं के फैशन में आ गया है।

- मित्रकासाथ देने के लिए भी वह मादक पदार्थों का सेवन इनके तथा समाज के भविष्य के लिए अभिशाप बन गया है।

- कुछविद्यार्थी मादक द्रव्यों एवं पदार्थों के अवैध व्यापार से बहुत लाभ कमा रहे हैं। ऐसे लोग उन देशों की अर्थव्यवस्था को बहुत अधिक क्षति पहुँचाते हैं, जहां बहुत बड़ी संख्या में मादक पदार्थों के व्यसनियों द्वारा अवैध पदार्थों की काफी मांग है।

- उच्चवर्गोंमें छात्र और छात्रायें दोनों समान रुप से मादक पदार्थों का सेवन करते हैं। क्लबों नृत्यग्रहों और काकटेल पार्टियों में इसे देखा जाता है। जब ये विद्यार्थी घर या हॉस्टल लौटते हैं तब वे दूसरों के साथ अनैतिकता का व्यवहार करते हैं।

मादक पदार्थों के दुरुपयोग का स्वायुतंत्र पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है शरीर के अन्य तंत्र भी इससे प्रभावित होते हैं, जिनमें अधिकांशतः व्यवहार सम्बन्धित विकृतियां हैं। शरीर में मादक द्रव्य की विद्यमानता अतिरिक्त रुप से लिये गये मादक द्रव्य के प्रभाव को बड़ा सकती है - जैसें -एक ही मादक द्रव्य का कई बार सेवन करने का संचित प्रभाव तथा एक ही बार में दो या दो से अधिक मादक द्रव्यों के लेने के प्रभाव।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के एक अध्ययन से पता चला है कि “8 से 14 वर्ष के बालकों द्वारा सेवन किये जाने के बढ़ते हुये दुरुपयोग के बारे में चिन्ता व्यक्त की है, जो सारेस अथवा बेंजाइन वाष्पशील विलायक द्रव्यों को सूंघते हैं। इस प्रकार के सेवन से हृदय और श्वसन सम्बन्धित जटिलताओं से अचानक मृत्यु हो सकती है या इसके लम्बे समय तक सेवन करते रहने से यकृत और गुर्दे की बीमारी हो जाती है और अस्थि मज्जा तक क्षतिग्रस्त हो जाती है।”[5]

नियंत्रण के उपाय:-

मादक द्रवयों के सेवन करने वालों को इसके परिणामों के बारे में सचेत करके उपयोग पर नियंत्रण लगाया जा सकता है। शिक्षा देने की विधि ऐसी होनी चाहिए कि लोग/छात्र अपने को सक्रिय रुप से उनमें जुड़े एवं सूचना का मुक्त आदान-प्रदान हो सके। द्रव्यों के रोकथाम संबंधी शैक्षणिक उपायों के लिये कालेज के युवा छात्रों विशेषकर छात्रावासों में माता-पिता से दूर रहने वाले छात्र, कच्ची बस्तियों में रहने वाले लोग, औद्योगिक श्रमिक, रिक्शा चालक आदि को शामिल किया जाना चाहिए।

- मादकद्रव्य दुरुपयोग को सामाजिक समस्या के साथ चिकित्सकीय समस्या के रुप में प्रस्तुत करना चाहिए।

- सरकार और परिवारों को गैर-सरकारी संगठनों के साथ रोकथाम कार्यक्रमों में रुचि लेना चाहिए। हॉस्टल में रह रहे छात्रों के साथ मिलकर गाइड को मादक द्रवयों पर रोकथाम करना चाहिए। कालेजतथा विद्यालय के छात्रों को समय-समय पर इसके दुष्परिणामों से सचेत करते रहना चाहिए। झुग्गी बस्तियों, हॉस्टल एवं किराये के मकानों में रहने वाले व्यक्तियों, छात्रों पर अधिक ध्यान देना चाहिए। पुलिसकर्मी और अन्य कानून लागू करने वाले व्यक्ति जो मादक द्रव्य बेचने वाले के साथ षड्यंत्र में पाये जाते हैं उन्हें प्रतिरोधक दंड देना जरुरी है।

- बच्चों को मादक पदार्थों के सेवन से बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका उनके माता-पिता निभा सकते हैं। अतः माता-पिता को पारिवारिक वातावरण में अधिक सावधानी अपनानी चाहिए।

- विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के लिए शराब और मादक द्रव्य दुरुपयोग के विरुद्ध एक सर्तकता पैदा करने हेतु कार्यक्रम बनाये जायें।

- हॉस्टल में रह रहे छात्र/छात्राओं के माता-पिता के साथ मिलकर अध्यापकों को परामर्श देना चाहिए और उनके बच्चों के प्रति सचेत करते रहना चाहिए।

- समय-समय पर विद्यालयों में मीटिंग कराना चाहिए जिससे विद्यार्थियों के माता-पिता को उनके बच्चों के बारे में जानकारी मिलती रहे।

- मादक पदार्थ तथा नशा ले रहे छात्रों को डॉ. को दिखाकर परामर्श लेना चाहिए तथा उनके बारे में कि वे ऐसा क्यों कर रहे हैं कारण जानकर उसको चिकित्सकीय सलाह पर दूर करना जरुरी है। वर्तमान समय में छात्राँए भी मादक द्रव्य का सेवन अधिक कर रही हैं मित्रों के साथ डिस्कों, किटी पार्टी आदि में भाग लेती है मित्रों की संगती में वह गलत करती है तब माता-पिता को चाहिए की ऐसे बुरी प्रवृत्ति वाले मित्रों की संगती से दूर रखें। क्योंकि संगती का बहुत प्रभाव पड़ता है विशेषकर बुरी संगती का। हम किसी विद्यार्थी (दुव्र्यसनी)

www.ignited.in

को मादक पदार्थों का सेवन करने से तुरन्त रोक नहीं सकते, जब तक कि वह स्वयं इसे छोड़ने क लिए तैयार न हो। उसे भी पहल करना होगा। अतः एक माता-पिता की हैसियत से उसे एक अच्छा पारिवारिक वातावरण देना होगा उसके प्रति प्रेम और लगाव रखना होगा। एक शिक्षक परामर्शदाता के रुप में हमें अपने छात्रों को मादक द्रव्यों के दुरुपयोग से उत्पन्न कष्टों के प्रति सचेत करना होगा और एक मित्र की हैसियत से उसकी इस बुराई को समझना होगा और व्यसन से उत्पन्न दोशों से उसे एवं उसके परिवार को अवगत कराना होगा।

- शिक्षा संस्थाओं में सहगामी क्रियाओं (Co-Curricular activities) पर बल दिया जाए, जिससे विद्यार्थी इधर-उधर घूमने के बजाय अपने समय का अच्छा सदुपयोग कर सकें।

- शिक्षा के सभी स्तरों पर मादक पदार्थों के दुरुपयोग से उत्पन्न बुराइयों की जानकारी देने वाले पाठ विभिन्न विषयों के साथ जोड़ें जांए।

- मादक पदार्थों के दुरुपयोग से उत्पन्न बुराईयों जैसे विषयों पर गोष्ठियाँ एवं सम्मेलनों का आयोजन ऐसे स्थान पर किये जांए, जहाँ द्रव्य व्यसनियों का जनसंख्या अधिक हो।

- औषधि दुरुपयोग करने वाले छात्र और छात्राओं का चिकित्सकीय इलाज करने के साथ-साथ उसका मनोवैज्ञानिक इलाज भी करने के साथ-साथ उसका मनोवैज्ञानिक इलाज भी किया जाय। मनोवैज्ञानिक चिकित्सा अधिक अच्छे परिणाम देने वाली है। मनोवेत्ता रोगी में आत्मविश्वास उत्पन्न करे, रोगी को प्रोत्साहित करे कि वह स्वयं अपनी समस्या एवं कष्टों को समझे। उसके जीवन में एक नया दृष्टिकोंण पैदा करना चाहिए। औषधिदुरुपयोग करने वाले व्यक्ति के साथ सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करना चाहिए। उसके साथ विचारों का आदान-प्रदान करना चाहिए, उसे मनोरंजन का भी ध्यान रखा जाए।

- मादक द्रव्यों के दुरुपयोग पर विभिन्न स्तरों जैंसे स्कूली, छात्रों कालेज और विश्वविद्यालीय छात्र/छात्रों, तथा अन्य युवकों की जानकारी देने के लिए पुस्तकें प्रकाशित की जानी चाहिए साथ ही आकाशवाणी औरदूरदर्शन के माध्यम से कार्यक्रम प्रसारित किये जाने चाहिए।

निष्कर्ष:-

द्रव्य-व्यसन दुरुपयोग वर्तमान तथा भावी पीढ़ियों के लिए उतना ही विनाशक है, जितना प्लेग जो पिछली शताब्दियों में विश्व के बहुत से देशों में फैल गया था। यदि इस पर नियंत्रण न पाया गया तो इसके और भी भयानक और विनाशकारी परिणाम होंगे। यघपि औषधि दुरुपयोग के इस अभिशाप को रोकने के लिए कोई तत्कालिक अथवा अल्पकालिक उपाय सम्भव नहीं है। इस समस्या के समाधान के लिए निश्चित किये जाने वाले उपायों में किसी देश के ऐतिहासिक तथा सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहलुओं को भी अवश्य ध्यान में रखना होगा इसके अतिरिक्त अधिकतम प्रभाव सुनिश्चित करने हेतु ऐसे सभी राष्ट्रीय प्रयासों का प्रादेशिक और अन्तर्राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर सतत समन्वय अवश्य किया जाना चाहिए। स्वापक और मनः प्रभावी औषधियों के दुरुपयोग से उत्पन्न समस्याओं को कम करने की कार्यवाही को अभी उन शक्तियों का भी सामना करना होगा जो प्रभावी कार्यक्रमों का विरोध करती है।

सन्दर्भ-ग्रन्थ एवं सहायक-पुस्तकें

1. विश्व स्वास्थय संगठन रिपोर्ट 28 जून 1986 टेलीग्राफ, कलकत्ता।
2. इलस्ट्रेटेड वीकली, जून 26 जुलाई, वाल्यूम 26, 28 और 29।
3. केन्द्रीय खाद एवं ड्रग प्रशासन, अमेरिका ।
4. राम आहूजा,सामाजिक समस्यायें, पृ0 394, 95 ।
5. टेलीग्राफ, कलकत्ता, 28 जून 1980 ।
6. राम आहूजा, सामजिक समस्यायें ।
7. एन. एन. ओझा,भारत की सामाजिक समस्यायें।

Corresponding Author

Dr. Mohammad Kamil*

M.A., Ph.D., UGC-NET (Sociology)